स्टार समाचार भोपाल
4 FEB 2017

नमामि देवी नर्मदे- सेवा यात्रा

दुनिया में नदियों के संरक्षण से ही बच सकती है संस्कृति

मैं संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस को पत्र लिखकर यह अनुरोध करूंगा कि वह पूरी दुनिया में संयुक्त राष्ट्र की अगुवाई में नदियों को संरक्षित और प्रदूषणमुक्त रखने के लिए लोगों को जागरुक करने अभियान चलाएं, हम इसमें उनके साथ हैं। आइए संकल्प लें कि हम पूरे विश्व में नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए लोगों का आव्हान कर एक सुखी, समृद्ध और सुंदर विश्व का निर्माण करेंगे।

ब्लॉग | शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश

नर्मदा जयंती के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई। शुक्रवार को हनुवंतिया में मां नर्मदा की पूजा-अर्चना एवं आरती करने के बाद कैबिनेट की बैठक में मध्यप्रदेश के विकास की योजनाओं के संबंध में निर्णय लेकर आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हुई है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के तट पर ही विकसित हुई हैं। नर्मदा घाटी भी इसका अपवाद नहीं है। नर्मदा घाटी का सांस्कृतिक इतिहास गौरवशाली रहा है। मां नर्मदा का आसपास की धरती को समृद्ध बनाने में बहुत योगदान रहा है। नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश की जीवन-रेखा कहा जाता है। मां नर्मदा को भारतीय संस्कृति में मोक्षदायिनी, पाप मोचिनी, मुक्तिदात्री, पितृतारिणी और भक्तों की कामनाओं की पूर्ति करने वाले महातीर्थ का भी गौरव प्राप्त है। नर्मदा नदी भारत की सात प्रमुख नदियों में से एक है। प्राचीन काल से ही नर्मदा की धारा में सामाजिक चेतना देखने को मिलती है। नर्मदांचल में अनेक पंथों के संतों का समय-समय पर आगमन हुआ। इनमें कबीर पंथ, सिख पंथ, तारण पंथ, राधावल्लभ पंथ और प्रणामी पंथ प्रमुख हैं। नर्मदा किनारे पर मैकल, व्यास, भृगु, अत्री और कपिल जैसे ऋषियों के तप करने का भी उल्लेख पुराणों में मिलता है। आदि शंकराचार्य ने भी इस भूमि पर तप किया। इन संतों ने अपनी वाणी और संदेश से नर्मदा क्षेत्र के धार्मिक वातावरण को उदार बनाया। इन्होंने इस क्षेत्र को धार्मिक विविधता प्रदान करते हुए यहां सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया, जो कि आज तक इस अंचल में विद्यमान है।

होशंगाबाद के सेठानी घाट का ऐतिहासिक महत्व है। ब्रह्म विद्या सोसायटी के संस्थापक हेनरी स्टल अलकाट ने यहां अपने अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ स्नान करके आध्यात्मिक आनंद प्राप्त किया था। इस घाट पर नर्मदा का जन्मोत्सव नर्मदा जयंती के रूप में वर्ष 1976 से मनाया जा रहा है। उस समय यह आयोजन नर्मदा में प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए ही प्रारंभ किया गया था, जो आगे चलकर सामूहिक पूजा में बदल गया। 'नमामि देवी नर्मदे-नर्मदा सेवा यात्रा' अभियान इतिहास की उसी परंपरा का पुनर्जीवन है, जो कि प्रदेश के नागरिकों को मां नर्मदा के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक पहलुओं से परिचित कराएगी। इस यात्रा का उद्देश्य नर्मदा और विश्व की सभी नदियों को प्रदूषण मुक्त रखने के संदेश और नर्मदा तपोभूमि के सामाजिक समरसता के विचार को पूरे प्रदेश, देश और समूची दुनिया में पहुंचाना है। नर्मदा नदी के तट पर स्थित अमरकंटक, भेड़ाघाट, ओंकारेश्वर, महेश्वर और मंडलेश्वर जैसे धार्मिक पर्यटन स्थलों पर श्रद्धालुओं की गतिविधियों से भी लोगों को रोजगार मिलता है। मैं तो कहता हूं कि नर्मदा अपने तट पर बसे प्रदेशवासियों को केवल रोजगार ही नहीं देती है, बल्कि जो भी उसकी वंदना करता है, उस पर मुक्त हस्त से कृपा बरसाती हैं। आज हनुवंतिया जैसा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल भी यहां विकसित हो पाया है। यह भी प्रदेश को एक नई पहचान देगा। मैया की कृपा से ही सूखे कंठों और खेतों को पानी मिल रहा है। उन्हीं की कृपा से हमारे अन्न के भंडार भरे हैं और बिजली मिलने से घरों का अंधेरा दूर हुआ है और प्रदेश को चार बार कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हुआ है। मुझे इस बात की खुशी है कि आज नमामि देवी नर्मदे-नर्मदा सेवा यात्रा अभियान एक जन आंदोलन बन गया है। सभी लोग बड़े उत्साह और उमंग के साथ दुनिया के सबसे बड़े नदी संरक्षण अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। आध्यात्मिक गुरु और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता दलाई लामा, हमारे देश के महान अभिनेता अमिताभ बच्चन, जिन्हें हम स्वर कोकिला के नाम से जानते है, ऐसी लता मंगेशकर जी और नोबल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ईस्ट तिमोर के नोबल शांति पुरस्कार विजेता जोस रामोस होर्ता और टयूनीथिया की नोबल शांति पुरस्कार विजेता बाहडेड बाउंचेमोई जैसी हस्तियों का हमें समर्थन प्राप्त हुआ है। इससे हमारा मनोबल बढ़ा है।